आंतरिक एवं गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA) द्वारा "शैक्षणिक संस्थानों में गुणवत्ता उन्नयन के उपाय" विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में **आंतरिक एवं गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA)** की ओर से " **शैक्षणिक संस्थानों में गुणवत्ता उन्नयन के उपाय**" विषय पर एक विशेष व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर संगीता शुक्ला, कुलपति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ तथा विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर विमला वाई, कुलपति, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय सहारनपुर उपस्थित रहे | प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने बताया कि शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार के लिए आधुनिक तकनीक, डिजिटल लर्निंग, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण पद्धति तथा शिक्षक विद्यार्थी के - बीच संवादात्मक वातावरण आवश्यक है। दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों की वेबसाइट हमेशा अपडेटेड होनी चाहिए. क्योंकि छात्र के पास विश्वविद्यालय की सूचनाएं प्राप्त करने का वही एक जरिया है । वह विवि से वेबसाइट से ही कनेक्टेड है या फिर वह विवि में सिर्फ परीक्षा देने आता है | इस रिक्तता को हमे भरना ही होगा तभी हम दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों को विवि के केन्द्र में रख पाएंगे। दूसरी बार कुलपति बनी प्रो. संगीता शुक्ला जंतु विज्ञान की प्रोफेसर हैं और अपने शैक्षणिक कार्यकाल में चौथी बार कुलपति का दायित्व संभाल रही हैं। इससे पूर्व वह दो बार जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर की कुलपति रह चुकी हैं। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के **आंतरिक एवं गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA)** प्रकोष्ठ के द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर विश्वविद्यालयों को समग्रता में आगे बढ़ाने पर विचार करना चाहिए। उन्होंने व्याख्यान में आगे यह भी कहा कि विवि को नए पाठ्यक्रम भी संचालित करने चाहिए। पाठ्यसामग्री समय समय पर अद्यतन होते रहनी चाहिए|







कार्यक्रम की रूपरेखा

"शैक्षणिक संस्थानों में गुणवत्ता उन्नयन के उपाय" विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम
आंतरिक एवं गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA)
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय

तिथि और समय: 22 अगस्त *2025, 03:00* अपराह्न
स्थान : *301A*, विश्वविद्यालय सभागार, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

Duration	Sequence of Activities	Key Person
03:00-3:02 p.m.	अतिथियों का मंच पर आमंत्रण	
03:02- 03:04 p.m.	दीप-प्रज्ज्वलन	मंचासीन अतिथियों द्वारा
03:04 – 03:15 p.m.	स्वागत-वक्तव्य एवं प्रस्तावना	प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे, निदेशक, सीका
03:15 – 03:20 p.m.	अतिथियों का परिचय एवं संबोधन हेतु आग्रह	प्रोफेसर गगन सिंह, निदेशक, वाणिज्य एवं प्रबंधन विद्याशाखा एवं सदस्य सीका
03:20 – 03:35 p.m	विशिष्ट अतिथि का संबोधन	प्रोफेसर विमला वाई, कुलपति, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय सहारनपुर
03:35 - 03:50 p.m.	मुख्य अतिथि का संबोधन	प्रोफेसर संगीता शुक्ला, कुलपति, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ
03:50 -04:00 p.m.	अध्यक्षीय संबोधन	प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी, कुलपति, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय
04:00 -4:05 p.m	धन्यवाद ज्ञापन	प्रोफेसर गगन सिंह,सदस्य,सीका



पाठ्यसामग्री बिल्कुल केन्द्रित व नयी होनी चाहिए। विज्ञान विषयों के शिक्षार्थियों के लिए प्रैक्टिकल समय-समय पर होने चाहिए साथ ही हैंड्स ऑन ट्रेनिंग भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जो विश्वविद्यालय हमेशा अपने शिक्षार्थी को केन्द्र में रखकर योजनाएं बनाते हैं, वह हमेशा आगे रहते हैं। उन्होंने नैक की ग्रेडिंग बढ़ाने के लिए भी सुझाव दिये और कहा कि पुराने काम को सबसे पहले डाक्यूमेंट करें तब पता चलेगा कि नया क्या क्या करना है, और साथ ही नैक का एसओपी सभी को पढ़ने की सलाह भी दी ताकि नैक की तमाम प्रक्रियाओं को हम पहले समझ लें। उन्होंने अंत में कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल अंक प्राप्त करने से नहीं होगी बल्कि शिक्षार्थी के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्य व जीवन कौशलों के विकास से होगी।

प्रोफेसर विमला वाई ने अपने संबोधन में कहा, कि दूरस्थ माध्यम के विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम हमेशा सरल, सुग्राह्य व चित्रात्मक होना चाहिए जिससे शिक्षार्थी उसे आसानी से आत्मसात कर सके। उन्होंने कहा कि नयी शिक्षा नीति को लागू करना परंपरागत विश्वविद्यालयों के लिए ही बहुत चुनौतीपूर्ण है| मुक्त एवं दूरस्थ विश्वविद्यालय को उसे लागू करने में ज्यादा मेहनत करनी होगी। उन्होंने कहा कि दूरस्थ शिक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता को मापने का एक पैमाना है, कि विवि से निकले शिक्षार्थी कहां-कहां क्या क्या कर रहे हैं | इसीलिए उन्होंने विश्वविद्यालय की एलुमुनाई एसोसिएशन बनाने पर जोर दिया| शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 का मूल उद्देश्य है। संस्थानों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए ठोस सुझवों और रणनीतियों की आवश्कता हैं| उन्होंने जोर दे कर कहा शिक्षकों की नियुक्ति व पदोन्नति के लिए न्यूनतम योग्यता मानक, नवाचार, समावेशिता, लचीलापन और गतिशीलता को बढ़ावा NEP 2020 के सिद्धांतों के अनुरूप सुधार करके **संस्थानों में गुणवत्ता उन्नयन किया जा सकता हैं** | वक्ताओं ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का संबंध केवल अंक प्राप्त करने से नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों और जीवन-कौशलों के विकास से है। उन्होंने सुझाव दिये कि –

- **शैक्षणिक संस्थानों** में **नवीनतम तकनीकी साधनों** का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।
- **शिक्षकों के प्रशिक्षण** पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि वे समय के साथ अद्यतन रहें।
- **अनुसंधान, नवाचार और सृजनात्मक गतिविधियों** को बढ़ावा देना चाहिए।
- विद्यार्थियों में **सकारात्मक सोच, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व** की भावना विकसित करनी चाहिए।



कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के लोकपाल प्रो. नरेन्द्र भंडारी ने कहा कि विज्ञान के विषयों में गुणवत्ता रखना ज्यादा बड़ी चुनौती है| उन्होंने कहा कि समय के अनुरूप पाठ्यक्रमों में बदलाव लाना विवि का पहला उद्देश्य होना चाहिए| इस व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विवि के कुलपति प्रो.नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि उत्तराखंड में भौगोलिक चुनौतियां बहुत हैं लेकिन यही







चुनौतियां दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालय का मजबूत पक्ष हैं | परंपरागत विश्वविद्यालय ये काम नहीं कर सकते, उनके वहां उपस्थिति की बाध्यता है, लेकिन हम अपने गुणवत्ता के पाठ्यक्रम के साथ पहाड़ के सुदूर एक एक शिक्षार्थी तक आसानी से पहुंच सकते हैं| हमने विश्विद्यालय को डिजिटल रूप में इतना सक्षम बना लिया है कि शिक्षार्थी घर बैठे ही सारी सूचनाओं से लेकर प्रवेश ले सकता है| अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा ही राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है| अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पांडे निदेशक, सीका द्धारा किया गया| प्रो.गिरिजा प्रसाद

पांडे ने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना नयी शिक्षा नीति का उद्देश्य है| जिसके लिए समय समय पर इस तरह के व्याख्यान आयोजित कर विशेषज्ञों से ठोस सुझाव लिये जाएंगे जिससे उन रणनीतियों पर काम हो सके।तथा मंच संचालन प्रोफेसर गगन सिंह सदस्य, सीका व निदेशक ,वाणिज्य एवं प्रबंधन विद्याशाखा के द्धारा किया गया| इस मौके पर विवि की प्रचार सामग्री का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रेनू प्रकाश, प्रो.राकेश चन्द्र रयाल, प्रो. डिगर सिंह फर्स्वाण, सीका के सदस्य, विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक तथा कर्मचारी उपस्थित रहें|

हमेशा अपडेट हो विवि की वेबसाइट छात्रों के पास सूचना का यही जरिया

माई सिटी रिपोर्टर

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विवि परिसर में सेंटर फॉर इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस (सीका) के तहत शुक्रवार को व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ। इसमें मेरठ के चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि कहा कि दूरस्थ और मुक्त विश्वविद्यालयों की वेबसाइट हमेशा अपडेट होनी चाहिए। छात्रों के पास सूचना का यही जरिया होता है। कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल अंकों से नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्य और जीवन कौशल से होगी।

अध्यक्षता कर रहे विवि के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि उत्तराखंड में भौगोलिक चुनौतियां बहुत हैं लेकिन यही दूरस्थ और मुक्त विश्वविद्यालय का मजबूत पक्ष है। सीका के निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे ने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता को बेहतर बनाना नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है। वहां प्रो.

मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यानमाला में शिक्षाविदों ने रखी अपनी राय

सरल और चित्रात्मक हो पाठ्यक्रम

व्याख्यानमाला में मां शाकुंभरी विश्वविद्यालय सहारनपुर की कुलपति प्रो. विमला वाई ने कहा कि दूरस्थ माध्यम के विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम हमेशा सरल व चित्रात्मक होना चाहिए। शिक्षार्थी आसानी से आत्मसात कर सकें। उन्होंने पुरातन छात्रों का एसोसिएशन बनाने का सुझाव दिया। विश्वविद्यालय के लोकपाल प्रो. नरेंद्र भंडारी ने कहा कि विज्ञान के विषयों में गुणवत्ता रखना ज्यादा बड़ी चुनौती है। समय के अनुरूप पाठ्यक्रमों में बदलाव लाना विवि का पहला मकसद होना चाहिए।

गगन सिंह, प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. राकेश चन्द्र रयाल, प्रो. डिगर सिंह फर्स्वाण, त्रिलोक सिंह मौजूद रहे।





